विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, चैत्र पूर्णिमा, 25 अप्रेल, 2013 वर्ष 42 अंक 11

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

ये च खो सम्मदक्खाते, धम्मे धम्मानुवत्तिनो।
ते जना पारमेस्सन्ति, मच्चुधेय्यं सुदुत्तरं॥

जो लोग सम्यक प्रकार से आख्यात धर्म का अनुवर्तन करते हैं, वे अति दुस्तर मृत्यु-क्षेत्र के पार चले जायेंगे।

धम्मपद- ८६, पण्डितवग्गो

भगवान की अपार करुणा

भगवान के हृदय में दुखियारों के प्रति अपार करुणा बरसती थी। दो घटनाएं हमारे सामने हैं :-

(१) पटाचारा

इसका जन्म श्रावस्ती नगर के एक महाधनी श्रेष्ठि-परिवार में हुआ था। परिवार में चार ही सदस्य थे - सेठ, सेठानी, एक पुत्र और एक पुत्री। यह छोटा-सा परिवार श्रावस्ती में एक सात- मंजिली विशाल हवेली में निवास करता था। पुत्री जब युवा हुई तो उसकी सेवा में एक युवा नौकर रखा गया, जिसकी कुसंगत में वह भटक गई। उसका विवाह कहीं और न हो जाय, इससे पूर्व ये दोनों हवेली में जो भी धन-आभूषण हाथ में आया, उसे समेट कर घर से भाग गये और नगर से दूर एक छोटे-से गांव में पति-पत्नी बन कर जा बसे।

घर से चुरा कर लाया हुआ धन जब तक समाप्त नहीं हुआ, तब तक गुजारा करते रहे। आखिरकार अत्यंत विपन्न अवस्था में दिन बीतने लगे। दो वर्ष बाद युवती गर्भवती हुई। उसके दो पुत्र हुए, परंतु संयोग से दोनों ही दुर्घटना में काल-कवलित हुए और पति को काले नाग ने डस लिया। यह दुखियारी अभागिनी रोती-बिलखती अकेली ही श्रावस्ती की ओर चल पड़ी। श्रावस्ती पहुँचने के पहले श्मसान-घाट पर ही पता चला कि पिछली रात तेज आंधी-तूफान और वर्षा के कारण पिता की सात मंजिली हवेली ढह गई। उसमें उसका पिता, माता और भाई तीनों दब कर मर गये। अब संसार में उसका अपना कोई नहीं बचा। इस आघात से वह पागल हो गई और श्रावस्ती की सड़कों और गलियों में अपना होश खोकर निर्वस्त्र भटकने लगी।

ऐसी दुरवस्था में अपने किसी पूर्वसंचित पुण्य के संयोग से एक दिन वह जेतवन विहार के पास से गुजरी, जहां भगवान बुद्ध लोगों को धर्म-देशना दे रहे थे। धर्म-वाणी सुन कर वह भगवान के समीप आई। भगवान ने करुणा-भरे शब्दों में कहा-- ''मेरी दुखियारी बेटी! अपना होश सँभाल!'' वाणी में स्नेह और मैत्री का अमृत भरा था। सुनते ही उस दुखियारी को जरा-सा होश आया। अपने नग्न शरीर पर ध्यान गया तो लाज के मारे सिकुड़ कर वहीं बैठ गई। समीप ही धर्म सुन रहे किसी भाई ने उस पर अपनी चादर डाली। तब से उस अभागिन दुखियारी का नाम ''चादर ओढ़ी हुई'' याने 'पटाचारा' पड़ गया। उसने भगवान से शरण मांगी। भगवान ने आश्वासन दिया - ''बेटी! धर्म धारण कर। धर्म तुझे सही शरण देगा।''

भगवान की वाणी से शुद्ध धर्म सुनते-सुनते उसका चित्त एकाग्र हुआ और भीतर विपश्यना जागी। पूर्व-पारमिताओं के कारण वहीं बैठे-बैठे वह श्रोतापन्न हुई। भगवान ने उसे प्रव्रजित करवाया। मुक्तिदायिनी विपश्यना के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते-बढ़ते वह श्रोतापन्न से अरहंत अवस्था तक जा पहुँची। अपना मनुष्य-जीवन सार्थक किया और सर्वथा दुःखमुक्त हुई।

(२) किसा गोतमी

भगवान बुद्ध के ही जीवन काल में उत्तर भारत की प्रसिद्ध नगरी श्रावस्ती के एक अत्यंत निर्धन परिवार में गोतमी का जन्म हुआ था। अत्यंत कृशकाय, दुबली-पतली होने के कारण लोग उसे ''किसा गोतमी'' कहते थे। वहीं के एक धनी कुल में उसका विवाह हुआ, परंतु उसे धनी परिवार का कोई सुख नहीं मिल पाया। गरीब परिवार से आयी थी, इसलिए उसे ताने सुनने पड़ते थे और ऊपर से संतान न होने के कारण भी हमेशा जली-कटी सुननी पड़ती।

कुछ वर्षों बाद उसका भाग्य पलटा। वह गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। परंतु यह पुत्र-सुख भी उसके भाग्य में नहीं था। दो-तीन वर्ष का होकर बालक का देहांत हो गया। यह पुत्र ही परिवार में उसके आदर-सत्कार का कारण था। पुत्र का देहांत उसके लिए असह्य हो गया। पुत्र-वियोग से वह अत्यंत दुःखी हुई। बच्चे की लाश को छाती से चिपका कर विलाप करने लगी। जब लोग मृत बच्चे की लाश को श्मसान ले जाने के लिए उद्यत हुए तो पागलों जैसी अवस्था में लोगों से प्रार्थना करने लगी कि किसी अच्छे वैद्य को बुलाओ, जो दवा देकर मेरे बच्चे को जीवित कर दे। मरे हुए को जीवित करने की कोई दवा नहीं होती। लोग समझ नहीं पाये कि इस दुखियारी को कैसे ढाढस बँधायें? तब किसी दयालु व्यक्ति ने उसे महाकारुणिक, महाभिषक भगवान बुद्ध के पास जाने की सलाह दी जो उस समय जेतवन विहार में ठहरे हुए थे।

किसा गोतमी अपने मृत बच्चे को छाती से लगाये रोती-बिलखती जेतवन विहार में भगवान बुद्ध के पास पहुँची। बच्चे की लाश को उनके चरणों के पास रख कर उसके जीवन-प्रदान करने की याचना करने लगी।

भगवान ने उसकी बेहाल अवस्था देख कर उसे नगर में किसी ऐसे घर से एक चुटकी सरसों के दाने लेकर आने को कहा, जिस घर में कोई मरा न हो।

किसा गोतमी खुश होकर नगर में किसी एक घर से सरसों के दाने मांगने आई। परंतु उसे नगर का एक भी घर ऐसा नहीं मिला, जिसमें कोई मरा नहीं हो। पूरे नगर के घरों में फिरते-फिरते थक गई, तब उसे होश जागा कि मरना तो प्राणीमात्र का धर्म है,

स्वभाव है। इस सच्चाई को समझाने के लिए ही भगवान ने मुझे यह काम सौंपा। सच्चाई का होश आने पर लाश को अंतिम संस्कार के लिए देकर भगवान की शरण लेने के लिए लौट आयी।

भगवान ने उसे धर्म सिखाया। भिक्षुणीसंघ में प्रव्रजित होकर पूर्वजन्मों की विपुल पुण्य-पारमी के कारण गंभीरतापूर्वक विपश्यना का अभ्यास करती हुई वह स्रोतापन्न हुई और अंततः अरहंत अवस्था प्राप्त की। उसने अनेक दुखियारी महिलाओं को शुद्ध धर्मयुक्त विपश्यना का प्रशिक्षण देकर दुःखमुक्त किया। भगवान ने उसे मोटे (रुक्ष) चीवर धारण करने वालियों में 'अग्र' की उपाधि दी।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

भगवान बुद्ध की शिक्षा के ह्रास के प्रमुख कारण

बुद्ध के बाद सम्राट अशोक ने बुद्ध की धर्म-शिक्षा भारत के दूर-दूर गांवों में और पड़ोसी देशों में भी फैलायी। अशोक के मरने के बाद उसकी संतानों में राजगद्दी प्राप्त करने की मन्शा से परस्पर तू-तू, मैं-मैं होने लगी। धीरे-धीरे राजपरिवार की सुख-शांति नष्ट होने लगी। अंततः सारा साम्राज्य बृहद्रथ के हाथों में आ गया। बृहद्रथ दुर्बल वृत्ति का राजा था। बाहर से दुश्मनों के आक्रमण होते रहते थे। अतः उसने अपनी अश्वारोही सेना के सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए किसी अन्य देश से आये पुष्यमित्र शुंग नामक युवक को अपनी अश्वसेना का प्रशिक्षक बनाया। धीरे-धीरे कुछ कुटिल लोगों की चालाकी से यह व्यक्ति सारी सेना का सेनापति हो गया। दुर्भाग्य से इन्हीं लोगों ने चालाकी से पुष्यमित्र के हाथों राजा की हत्या करवा दी और पुष्यमित्र शुंग को राजगद्दी पर बैठा दिया जो कि सेना का सेनापति था। वह राजमद में मस्त हो गया। उसे नहीं दीख रहा था कि षड़यंत्रकारी उसके द्वारा क्या करवा रहे हैं। उसके बाद वे अपनी मनमानी करने लगे - ''सैंया भये कोतवाल, अब डर काहे का'' - यह कहावत चरितार्थ होने लगी।

लोगों में बहुत बड़ी भ्रांति फैली कि पुष्यमित्र शुंग के राज्य में समस्त ब्राह्मण समाज ने मिल कर बुद्ध की शिक्षा को नष्ट कर दिया। वस्तुतः सामान्य ब्राह्मणों को बुद्ध की शिक्षा से कोई विरोध नहीं था। विरोध ब्राह्मणों के पुरोहित वर्ग के मन में जागा क्योंकि जो पशु-यज्ञ होते थे, वे बुद्ध की शिक्षा से बंद होते चले गये। अतः उन यज्ञों से होने वाली उनकी बड़ी आमदनी में रुकावट आयी। यह सच है कि सभी पुरोहित ब्राह्मण ही थे, परंतु सच यह भी है कि सभी ब्राह्मण पुरोहित नहीं थे। यज्ञ बंद होने से सबसे बड़ी हानि पुरोहित वर्ग के ब्राह्मणों को हुई। अतः उन्होंने नयी-नयी तैयार हुई संस्कृत भाषा में जो साहित्य रचा, उसमें बुद्ध की शिक्षा को लोगों के लिए अग्राह्य और गलत बताया गया और यों बुद्ध की शिक्षा विनष्ट होती चली गयी।

अतः सभी ब्राह्मणों को बुद्ध की शिक्षा को विनष्ट करने में जिम्मेदार ठहराना बिल्कुल गलत है। क्योंकि बुद्ध की विद्या को नष्ट करने वाले तो इने-गिने पुरोहित थे जो ब्राह्मण वर्ग के अवश्य थे, परंतु ब्राह्मणों का आम समाज पुरोहितगिरी नहीं करता था। अतः बुद्ध के द्वारा पशु-यज्ञ बंद करा देने से उनका बहुत बड़ा नुकसान नहीं था। यज्ञों का प्रमुख लाभ तो पुरोहितों को प्राप्त होता था। बाकी अन्य ब्राह्मणों को तो केवल प्रसादी के रूप में बलि पर चढ़े पशु के मांस के कुछ टुकड़े मिल जाते थे। इन यज्ञों के बंद होने से सबसे बड़ी हानि पुरोहितों को हुई, न कि अन्य ब्राह्मण समाज को। पुरातन साहित्य के अवलोकन से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि कौन-से यज्ञ को कराने पर पुरोहित को कितनी दक्षिणा मिलती थी :-

(१) अग्निहोत्र यज्ञ -- १००० से आधिक गायें और चांदी के ढोल चढ़ाया हुआ सफेद रथ

(२) विश्वजित यज्ञ -- अपनी सारी संपत्ति अथवा १००० गायें और १०० घोड़े

(३) विश्वजित शिल्प यज्ञ -- राजा और उसके प्रदेश की हैसियत के अनुसार जितना वह दे सकता है, देना पड़ता है।

(४) स्येन यज्ञ -- क्योंकि यज्ञ का रूप जादू-टोना है, दक्षिणा के तौर पर एक आंख वाली, लूली, बिना सींग, बिना पूंछ की, बीमार गाय देनी पड़ती थी।

(५) साड्यशक्र यज्ञ -- ६००६ गायें

(६) वाजपेय यज्ञ -- १७०० गौएं, १७०० मूल्यवान कपड़े, १७०० भेड़, १७०० बकरियां। कहीं-कहीं १७००० भी कहा गया है।

(७) राजसूय यज्ञ -- २४००० गायें

(८) अश्वमेध यज्ञ -- अनगिनत गायें और रानी और पुत्री तक को पुरोहित को दिया जाता था।

(९) सर्वमेध यज्ञ -- अपनी सारी जमीन-जायदाद, अपनी मिल्कियत की सारी संपत्ति पुरोहित को दी जाती थी।

आम ब्राह्मण पुरोहित नहीं थे। अनेक ब्राह्मण भिन्न-भिन्न प्रकार के रोजगार से अपना पेट पालते थे। **उदाहरणस्वरूप :--**

१- वैद्य का कार्य, २- राज अमात्य का कार्य, ३- शिकार करने का कार्य, ४- मछली पकड़ने का कार्य, ५- राजा की सेवा का कार्य, ६- आचार्य (सिखाने-पढ़ाने का कार्य), ७- पशुपालन का कार्य, ८- मेहनत-मजदूरी का कार्य, ९- खेत जोतने का कार्य, और १०- तलवार के लक्षण बताने का कार्य, इत्यादि।

पुरोहित वर्ग में भी कुछ चुने हुए लोग जो नई-नई संस्कृत भाषा के विद्वान थे, वे बुद्ध द्वारा प्रयुक्त बहुत से साधना संबंधी शब्दों का प्रयोग अपने प्रशिक्षण में करने लगे, ताकि लोगों को यह भ्रांति हो कि उनकी विद्या तो पुरातन है जिसे बुद्ध ने उनके साहित्य से प्राप्त किया है। उन्होंने ऐसे साहित्य की रचना की, जो कि बुद्ध की शिक्षा का विरोधी साबित हुआ। बुद्ध की शिक्षा में आर्य अष्टांगिक मार्ग बहुत प्रसिद्ध था, अतः उन्होंने अष्टांग योग का निर्माण किया। बुद्ध की विपश्यना में सिर से पांव और पांव से सिर तक भीतर की सच्चाई को देखने की क्रिया थी, जिसे अनुलोम-प्रतिलोम कहते थे। उन्होंने श्वास के आवागमन को अनुलोम-प्रतिलोम का नाम दे दिया, ताकि लोगों को भ्रांति हो कि यह अनुलोम-प्रतिलोम की शिक्षा भी बहुत पुरातन है। इस प्रकार पुरोहित-वर्ग के इन संस्कृत-साहित्यकारों ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि बुद्ध ने इस पुरातन विद्या के आधार पर अपनी शिक्षा का विस्तार किया।

पुरोहितों ने समाज में इस बात का भी प्रबल प्रचार किया कि कृष्ण बुद्ध से पूर्व के अवतार थे। अतः उनके समय की गीता निश्चित रूप से पुरातन ग्रंथ है। जबकि वास्तविकता यह है कि गीता बुद्ध के बाद की रचना है और बुद्ध की शिक्षा पर गीता का प्रभाव नहीं है बल्कि गीता पर बुद्ध की शिक्षा का प्रभाव है।

दूसरा उन्होंने देखा कि बुद्ध की शिक्षा का विस्तार इसलिए हुआ कि यह सांप्रदायिक शिक्षा न होकर सार्वजनीन शिक्षा थी। बुद्ध की शिक्षा का आधार शील, समाधि है और सदाचरण ही धर्म है। लोग इसे सांप्रदायिक नहीं मानते थे। अतः इसका फैलाव होने

में कोई कठिनाई नहीं हुई। बुद्ध ने अपनी शिक्षा को 'धर्म' कहा, जो कि सबका होता है। अपने अनुयायियों को 'धार्मिक' कहा, इसे सब स्वीकार करते हैं। अतः उन्होंने बुद्ध की शिक्षा पर गहरी चोट यह पहुँचायी कि उनकी शिक्षा 'धर्म' न होकर 'बौद्ध-धर्म' थी और उनके अनुयायी 'धार्मिक' न होकर 'बौद्ध' थे। इस प्रकार बुद्ध की सार्वजनिक शिक्षा सांप्रदायिक बना दी गयी और लोग इसको भी एक 'सांप्रदायिक-धर्म' मानने लगे। इससे बुद्ध की शिक्षा का जिस सहज भाव से विस्तार हो रहा था, वह रुक गया।

संप्रदाय शब्द धर्म के रूप में माना जाने लगा। अतः जब भारत का संविधान बना तो गलती से उसे हिंदी भाषा में 'धर्म-निरपेक्ष' कहा गया। कोई भी अच्छा राज्य धर्म-निरपेक्ष नहीं होता बल्कि 'धर्म-सापेक्ष' होता है, यद्यपि 'संप्रदाय-निरपेक्ष' अवश्य होता है। अंग्रेजी में बने हुए भारतीय संविधान का हिंदी अनुवाद हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान सेठ गोविंददास द्वारा किया गया और उन्होंने हिंदी अनुवाद में 'धर्म-निरपेक्ष' शब्द का प्रयोग किया, जो कि गलत था। सेठ गोविंददास जब रंगून में मुझसे मिले तो मैंने उनसे कहा कि अच्छा राज्य धर्म-निरपेक्ष कैसे होगा? राज्य तो 'धर्म-सापेक्ष' होना चाहिए। हां, संप्रदाय-निरपेक्ष अवश्य है। उन्होंने अपनी गलती स्वीकारी और आगे जाकर के 'धर्म-निरपेक्ष' की जगह 'पंथ-निरपेक्ष' कर दिया। हिंदी के एक अन्य विद्वान ने भी इस बात की आवाज उठायी कि 'धर्म-निरपेक्ष' नहीं कहना चाहिए और 'पंथ-निरपेक्ष' शब्द का उन्होंने भी समर्थन किया।

सारे देश में आज भी 'धर्म' का अर्थ 'संप्रदाय' के रूप में लिया जाता है, जैसे-- हिंदू-धर्म, जैन-धर्म, इस्लाम-धर्म, सिक्ख-धर्म इत्यादि। 'धर्म' सबको स्वीकार्य है और बुद्ध की शिक्षा जब तक 'धर्म' थी, तब तक सबको स्वीकार्य थी। परंतु 'बौद्ध-धर्म' बनते ही अन्य संप्रदायों की भांति ही वह संप्रदाय हो गयी। यह मान्यता दुर्भाग्य से सारे भारत में ही नहीं बल्कि पड़ोसी देशों में भी फैली। अंग्रेज लोग भारत में आये तो उन्होंने हिंदुइज्म (Hinduism), जैनिज्म (Jainism) जैसे शब्दों की भांति बुद्ध की शिक्षा को भी 'बुद्धिज्म' (Buddhism) कहना शुरू कर दिया और उनके अनुयायियों को 'बुद्धिष्ट' (Buddhist) कहने लगे। इस प्रकार अंग्रेजों ने बुद्ध की शिक्षा को बुद्धिज्म घोषित किया और उसके अनुयायियों को बुद्धिष्ट। राजा की मान्यता का प्रभाव प्रजा पर पड़ने लगा। जहां-जहां उनके राज्य का विस्तार हुआ, वहां-वहां बुद्ध की शिक्षा धर्म न रह कर 'बौद्ध-धर्म' हो गयी और 'बुद्धिज्म (Budhhism)' कहलायी और इसको मानने वाला 'धार्मिक' न होकर 'बौद्ध' हो गया। बुद्ध की शिक्षा सांप्रदायिकता-विहीन थी, सार्वजनीन थी। उसे सांप्रदायिक बनाने के लिए अन्य शिक्षाओं की भांति जब 'बौद्ध-धर्म' कहा जाने लगा तब बुद्ध की शिक्षा के पतन का यह एक बड़ा कारण हुआ। लोगों में इस बात का प्रचार होने लगा कि ''स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह'' - पराये धर्म में जाने की अपेक्षा स्वधर्म में मरना श्रेयस्कर है। गीता के ये बोल बुद्ध के बाद के हैं लेकिन गीता को बुद्ध से पूर्व की रचना बता कर इस पद को पुराना प्रसिद्ध कर दिया गया। वस्तुतः इसे पुरातन भारतीय संस्कृति से नहीं लिया गया, बल्कि बुद्ध की शिक्षा को बिगाड़ कर ग्रहण किया।

जिसे 'धर्म' कहते हैं उसे सभी जाति, वर्ण, गोत्र, संप्रदाय अथवा देश-विदेश के लोग एक समान स्वीकार करते हैं क्योंकि धर्म सबका होता है। ''सदाचरण ही धर्म है, दुराचरण ही पाप'' - इस बोल में किसी को कोई मतभेद नहीं होता। लेकिन जब बुद्ध की शिक्षा को ''बौद्ध-धर्म'' कहना शुरू कर दिया तो उसे भी संप्रदाय के साथ जोड़ कर लोग यह समझने लगे कि यह तो पराया धर्म है, उनको इससे दूर रहना चाहिए। भारत में बुद्ध की शिक्षा के पतन होने का यह एक बड़ा कारण हुआ।

मैंने पड़ोसी देश बर्मा (म्यंमा) में देखा कि आम जनता अपनी भाषा में बुद्ध के धर्म को 'टया' कहती है, जिसका अर्थ ही 'धर्म' है। ''टया ना थौं मै''- माने धर्म का प्रवचन सुनेंगे। ''टया ठाइं मै'' - माने धर्म की साधना में बैठेंगे। परंतु साथ-साथ 'बुद्धिज्म' और 'बुद्धिष्ट' शब्द भी बहु-प्रचलित हो गये, क्योंकि - ''जैसा राजा वैसी प्रजा।'' जैसे ही बुद्ध की शिक्षा सार्वजनीन न रह कर सांप्रदायिक हो गयी वैसे ही स्वभावतः लोग इससे दूर भागने लगे।

इसी प्रकार ''सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'' - यहां भी सर्व धर्मों का मतलब सभी सांप्रदायिक धर्मों से है, जिनमें बुद्ध की शिक्षा भी सम्मिलित कर ली गयी। यह भी चालबाजी का प्रयोग था, जो कि बुद्ध के दुश्मनों ने फैलाना शुरू किया और बुद्ध की शिक्षा का ह्रास होता चला गया।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

मित्र उपक्रम धम्मसेवा

पूज्य गुरुदेव की दूरदृष्टि इस बात पर गयी कि सभी स्कूलों में आनापान बचपन से ही सिखायी जाय। इसके लिए आवश्यक था स्कूल के अध्यापक भी विपश्यना करें ताकि उन्हें नियमित रूप से अभ्यास कर सकने में सहायता कर सकें। तदर्थ महाराष्ट्र सरकार ने अपनी सभी स्कूलों में एक जी.आर. निकाल कर अध्यापकों को विपश्यना में जाने का प्रोत्साहन दिया। विपश्यना विशोधन विन्यास और महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से **मित्र उपक्रम** की स्थापना की गयी और इसके संचालन के लिए अनेक सहायक आचार्य, सरकारी अधिकारी और धर्मसेवकों ने मिल कर काम को आगे बढ़ाया। इस प्रकार महाराष्ट्र में अब लगभग ढाई करोड़ विद्यार्थियों को आनापान सिखायी जा चुकी है।

गत वर्ष लगभग २,८०० स्कूल के अध्यापकों ने विपश्यना के १०-दिवसीय शिविरों में भाग लिया और इस वर्ष लगभग ५०,००० अध्यापक शिविरों में भाग लेने वाले हैं। ये शिविर **अ-केंद्रीय** स्थानों पर लगाये जायँगे, जिनके सुचारुरूप से संचालन के लिए बहुत बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की आवश्यकता है। कृपया धर्मसेवा के लिए अपने नाम निम्न फोन नंबरों पर या ईमेल से लिख भेजें--

मुंबई क्षेत्र में -- सफाले, पनवेल और बिलीमोरा के लिए- कु. दीना रवानी - 9833693343. **नाशिक** -- श्री साजिद वजीर शेख- 9823152254 या ईमेल- sajid.shaikh@sarda.co.in; **कोल्हापुर**-- श्री सुनील चौगुले - 9422855258; **अन्य स्थानों के लिए** -- श्री रवींद्र खरात - 9930268875
मुख्य ई-मेल-- mitraupkrammumbai@gmail.com,
online Regn. http//www.globalpagoda.org/mitra-seva

आवेदन-पत्र मिलने पर धर्मसेवकों को उनके लिए विशेष कार्यसूची व अन्य विवरण समझाये जायँगे ताकि उनकी सेवा का अधिक से अधिक लाभ लोगों को प्राप्त हो सके और सही माने में **बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय** सेवा हो। जो आचार्य इन शिविरों में सेवा देना चाहते हैं वे कृपया श्री ऋषिकांत मेहता से 09408283018 संपर्क करें। धन्यवाद!

दो दिवसीय निवासीय बाल-शिविर

धम्मवाहिनी, टिटवाला विपश्यना केंद्र पर **१२ से १५ वर्ष** के बच्चों के लिए **दो** दिवसीय **निवासीय शिविर** आयोजित किये जा रहे हैं। साधक कृपया नीचे लिखी तिथियां और बुकिंग का समय देख कर, सही समय पर बच्चों के लिए बुकिंग (रजिस्ट्रेशन) अवश्य करायें। (१) आगामी २६ व २७ मई को **केवल लड़कों** के लिए, बुकिंग **१५ मई** के बाद; (२) इसी प्रकार ६ एवं ७ जून को, **केवल लड़कियों** के लिए, बुकिंग **२५ मई** के बाद; **संपर्क :** फोन नं. 022-25162505/ 25011096 पर ऑफिस काल में संपर्क करें।

तथा **१७ से २५ मई** केवल **किशोरों** के लिए एवं **२८-५ से ५-६** तक केवल **किशोरियों** के लिए **८ दिवसीय** शिविर। **अन्य कई केंद्रों** पर भी **किशोर-किशोरियों** के शिविर अलग से निश्चित हुए हैं। कृपया संबंधित केंद्रों से संपर्क करें।.

निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र

हरियाणा के रोहतक शहर से १०-किमी. की दूरी पर लाहली गांव में विपश्यना केंद्र का निर्माणकार्य प्रगति पर है। पूज्य गुरुदेव ने इसे **'धम्म हितकारी'** नाम दिया है। **विपश्यना ध्यान समिति**, द्वारा- जनसेवा संस्थान, भिवानी रोड, रोहतक. को ८०-जी आयकर की छूट प्राप्त है। साधक इस पुण्यकार्य में भागीदार बन कर दान-पारमी का लाभ उठा सकते हैं। निम्न बैंकों में सीधे पैसे जमा करने पर कृपया **विपश्यना ध्यान समिति** के व्यवस्थापक को रसीद के लिए अवश्य सूचित करें--

Andhara Bank A/c 113410011000218 (IFS Code: ANDB0001134) or **Oriental Bank** A/c. 07952191038955 (IFS Code: ORDC0100795)
Email: vipassanarohtak@gmail.com;

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Jeff & Mrs. Jill Glenn, USA, To assist the Centre T. in serving **Dhamma Kunja**

सहायक आचार्य

१. श्री कपिलनाथ साहू, रायपुर **धम्म उत्कल** की सेवा में केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२ श्री चंदुभाई एवं श्रीमती ज्योत्सना मेहता, **धम्म कोट** की सेवा में केंद्र-आचार्य की सहायता

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री अनिल अनोपचंद शाह, भावनगर
२. श्री दीपक मुचरीकर, जलगांव
३. श्री डोंगर जोप, पुणे
4. Ms. Bridget Riley, USA
5. Mr. Charlie Dowley, Australia
6. Mrs. Ming-Chiao Wendy Tai, Taiwan
7. Mr. Leon & Mrs. Yonit Yogev, USA
8. Mrs. Simin Sarmadi Zokaei, Iran

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री केशव गेडाम, नागपुर
२. श्री राजेश पटेल, राजकोट
३. श्री ताराचंद चौधरी, जयपुर
4. Mr. Robson Almeida, Brazil
5. Ms. Silvia Escorel, Brazil
6-7. Mr. John Parlett & Mrs. Alisha King, USA

बालशिविर-शिक्षक

१. श्रीमती शांताबेन महावंशी, साबरकांठा (गुजरात)
२. श्री अमृत पटेल, साबरकांठा
३-४. श्री अरविंद एवं श्रीमती हंसा पंड्या, साबरकांठा
५. श्री रमेश सोनी, साबरकांठा
६. श्री भीकाभाई देसाई, अहमदाबाद
७. श्री विपिनचंद्र देसाई, अहमदाबाद
८. श्रीमती मालिनीबेन दाबके, अहमदाबाद
९. श्री समीर शेलात, अहमदाबाद
10. Ms. Dalene Peacock Cape Town, South Africa
11. Mr Kevan Watkins Worcester, South Africa
12.Mr. Nima Afshar Australia

बुद्धपूर्णिमा (वैशाख पौर्णिमा) के अवसर पर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

25 मई, 2013, शनिवार, समयः प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **3 बजे पूज्य गुरुजी के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है। कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें।** कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क : फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, (फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

ग्लोबल पगोडा परिसर में पालि - पाठ्यक्रम-२०१३

आवासीय पाठ्यक्रमः– ९० दिवसीय : पालि-अंग्रेजी; अवधि- १-७-१३ से ३०-९-१३ तक; आवेदन की तिथि-१५-५-१३ तक; आवेदन पत्र– www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं. **संपर्कः** विपश्यना विशोधन विन्यास (VRI), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

बुद्ध-शिक्षा और विपश्यना पर एक वर्षीय पालि डिप्लोमा कोर्स

वि.वि.वि. (VRI) एवं मुंबई विश्वविद्यालय के दर्शन-विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्ष १३-१४ के लिए **अंग्रेजी माध्यम** से **पालि डिप्लोमा कोर्स** निर्धारित किया गया है। **स्थल-** 'ज्ञानेश्वर भवन', दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्या नगरी परिसर, कालीना, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई-४०००९८. **आवेदन-पत्र** उक्त स्थल से १ से १५ जुलाई, सोम से शुक्र तक, ११-३० से २-३० बजे के बीच. **कोर्स-अवधि** २०-७-१३ से ३१-३-२०१४ तक. **समय--** अपराह्न २-३० से सायं ६-३० बजे तक. **योग्यता--** कम से कम १२वीं उत्तीर्ण छात्रों के लिए, जिन्हें दीवाली अवकाश में विपश्यना शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा. **अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें–** १). डॉ शारदा संघवी – फोनः ०२२- २३०९५४१३, मो. ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः** s_sanghvi@hotmail.com; २) श्रीमती लाम्बा : ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुलकरः ०९८२०५८३४४०.

दोहे धर्म के

शुद्ध सत्य ही धर्म है, अनृत धर्म न होय।
जहां पनपती कल्पना, धर्म तिरोहित होय॥

सदाचार ही धर्म है, दुराचार ही पाप।
पर सेवा ही धर्म है, पर पीड़न ही पाप॥

भीतर बाहर स्वच्छ हों, करें स्वच्छ व्यवहार।
सत्य प्रेम करुणा जगे, यही धर्म का सार॥

सम्प्रदाय या जाति का, जहां भेद ना होय।
शुद्ध सनातन धर्म है, वंदनीय है सोय॥

धन्य! धन्य! गुरुदेव जी, धन्य! बुद्ध भगवान।
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होय जगत कल्याण॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

करुणासागर बुद्धजी! थांरो ही उपकार।
धरम दियो मंगळ करण, सुखी करण संसार॥

गुण गाऊं मैं बुद्ध रा, मुक्त कंठ साभार।
परम धरम बांट्यो इस्यो, हुयो जगत उपकार॥

धरम जगत रो ईस्वर, धरम ब्रह्म भगवान।
धरम सरण मंगळ करण, धरम सरण सुख खाण॥

हो अनुकंपा धरम री, करुणा स्यूं भरपूर।
खुलै किंवाड़ा मोक्ख रा, अंतराय ह्वै दूर॥

जन जन पीड़ित हो रह्या, किसो' क अत्याचार।
धरम जग्यां ही जगत रो, मिटसी पापाचार॥

धरती पर फिर उमड़सी, धरम गंग री धार।
प्यास बुझासी जगत री, करसी जन उद्धार॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, चैत्र पूर्णिमा, 25 अप्रेल, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org